# कड़वा सच

निशात फारूक

पुस्तक-विवरण

| | | |
|---|---|---|
| 1. | पुस्तक का नाम | **बड़वा सच** |
| 2. | लेखक | **निशात फारूक** |
| 3. | मूल्य अंकित | **4.50** |
| 4. | प्रकाशक | भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ<br>17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट<br>नयी दिल्ली 110002 |
| 5. | प्रस्तुतकर्ता | भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ<br>17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट<br>नयी दिल्ली 110002 |
| 6. | प्रथम प्रकाशन तिथि | **वर्ष 1992** |
| 7. | अधिकतम कमीशन | **33 प्रतिशत** |
| 8. | प्रस्तुत पुस्तक का संस्करण वर्ष | **वर्ष 1992** |
| 9. | पुस्तक का विषय | **परिवार कल्याण और जनसंख्या** |
| 10. | लेखक का मूल निवास, स्थान एवं वर्तमान पता | **द्वारा, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ<br>नयी दिल्ली 110002** |

# कड़वा सच

उपन्यास

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

# कड़वा सच

निशात फारूक

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1992 : मूल्य : 4.50

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110 091

## प्रकाशकीय

प्रौढ़ शिक्षा में नवसाक्षरों के लिए साहित्य का अभाव सदैव रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ विभिन्न अभिकरणों के रचनात्मक सहयोग से ऐसे साहित्य के निर्माण एवं प्रकाशन की दिशा में अग्रणी रहा है। समय-समय पर प्रयोजन से आयोजित लेखक कार्यशालाओं में से विगत कार्यशाला में प्रस्तुत पुस्तक की रचना संभव हो पायी।

श्रीमती निशात फारूक राज्य संसाधन केन्द्र, जामिया मिलिया इस्लामिया में निदेशक हैं। नवसाक्षरों के लिए उन्होंने काफी लिखा है। उनका यह उपन्यास नारी-जीवन की विकट समस्या के साथ ही परिवार-कल्याण और जनसंख्या समस्या का भी समाधान तलाश करने की कोशिश करता है।

इस महत्वपूर्ण पुस्तक को आप केवल लाभप्रद ही नहीं वरन् जीवन के विभिन्न सोपानों से जुड़ा होने के कारण अत्यन्त ही उपयोगी पाएंगे।

रूबी किड फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं एशियन साउथ पैसिफिक ब्यूरो आफ एडल्ट एजूकेशन के सहयोग से ही यह प्रकाशन संभव हो पाया है। इस हेतु हम सभी के कृतज्ञ हैं।

—कैलाश चौधरी
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
प्रबन्ध न्यासी, रूबी किड फाउंडेशन

# कड़वा सच

# कड़वा सच

सांझ घिर आई थी। सूरज की लाली से आकाश लाल हो रहा था। चिड़ियां अपने घोंसलों की ओर वापस जा रही थीं।.....

सोना की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। रमेश अभी तक वापस नहीं आया था। रोज वह पांच बजे ही वापस आ जाता था। किसी वजह से अगर कभी उसे देर हो जाती थी तो सोना का मन आशंकाओं से भर जाता था।

आज भी सोना के मन में बुरे-बुरे विचार आ रहे थे। घबराकर वह कभी इधर टहलती तो कभी उधर। कभी वह खिड़की से झांकती तो कभी दरवाजे पर जा खड़ी

होती।

आखिर में थक कर वह बिस्तर पर लेट गई। सामने ही उसकी शादी की तसवीर टंगी थी। उसकी नजर तसवीर पर अटक गई। तसवीर में वह रमेश की बगल में शरमाई-सी सिमटी-सिकुड़ी खड़ी थी। उसकी आंखों में सपनों के बादल तैर रहे थे। लेकिन अब ? अब उसकी आंखों में केवल डबडबाया खालीपन था।

रमेश सोना को बहुत चाहता था। उसके प्यार में वह सब-कुछ भूल गई थी। शादी के कुछ दिनों बाद रमेश जब रोज काम पर चला जाता था तो उसके जाने के बाद सोना एकदम अकेली हो जाती थी। उसे वह अकेलापन काटता था। रमेश साढ़े पांच बजे वापस आ जाता था। लेकिन सोना चार बजे से ही उसका इंतजार करना शुरू कर देती थी। रमेश के वापस आते ही सोना की उदासी कहीं गायब हो जाती। वे सब-कुछ भूल कर एक दूसरे में खो जाते ! .....

तीन साल इसी तरह बीत गए। इस बीच सोना की कई सहेलियों की भी शादी हुई और वे सब तो मां बन चुकी थीं। उनके बच्चों को देखकर सोना के मन में एक हूक सी उठा करती थी। आज भी उसे सहेलियों की याद आ रही थी। बच्चों की किलकारियां उसके कानों में गूंज रही थीं। अपने बदन पर वह नन्हों हथेलियों की छुअन महसूस कर रही थी।.....

—सोना इन्हीं विचारों में खोयी थी कि दरवाजा खटकने की आवाज आई। वह चौंक कर उठ बैठी। उसने दरवाजा खोला। सामने रमेश खड़ा था। वह बहुत थका हुआ लग रहा था। उसके हाथ में सब्जी का थैला था।

उसका उतरा मुंह देखकर सोना थोड़ी देर पहले की सोच का सारा दुःख भूल गयी। दौड़ कर वह पानी ले आयी। हाथ-मुंह धोकर रमेश ताजा हो गया।

रमेश को चाय का प्याला पकड़ाते हुए सोना ने पूछा, "क्या बात है ? आज क्या बहुत काम था ? बहुत थके हुए लग रहे हो !"

रमेश ने चाय का घूंट भर कर कहा, "तुमने ढेरों सामान जो लाने को कहा था। वही खरीदने में यह हाल हो गया।"

दूसरे दिन सोना की सास आने वाली थीं। इसीलिए सोना ने आज बहुत सा सामान मंगवाया था।

सोना की सास को यह बात बहुत चुभती थी कि सोना अभी तक मां नहीं बन सकी थी।

शादी होने के पहले साल शुरू में हर सुबह जब सोना उनके पैर छूती थी, तो आशीर्वाद मिलता था—"दूधो नहाओ पूतो फलो!" लेकिन जब एक साल यों ही बीत गया तो उन्हें चिन्ता शुरू हुई। फिर उन्होंने यह भी सोचा कि रमेश और सोना शायद अभी बच्चा नहीं चाहते। लेकिन उनका मन तो पोता खिलाने के लिए तरस रहा था।

उन्हें इसका बराबर इंतजार रहता कि सोना कब खुशखबरी सुना रही है!

लेकिन जब दूसरा साल भी यों ही निकल गया तो उनसे नहीं रहा गया। एक दिन वे उबल ही पड़ीं, "आज-कल की लड़कियां तो अपने मन की हैं। वे बच्चे पालना ही नहीं चाहतीं। अरे मैं ही पाल दूंगी……।"

सोना ने कहना चाहा, "मां जी, आप गलत समझ रही हैं। क्या यह अपने वश की बात है? जब ईश्वर की ही मर्जी नहीं है तो मैं क्या करूं?"

मगर उसकी जबान न खुल सकी। वह सिर झुकाये चुपचाप अपने काम में लगी रही।

……दिन पर दिन मां जी की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। अब तो उन्होंने लिहाज करना भी छोड़ दिया था।

वे बात-बात पर सोना को ताने देती थीं।

साधु-फकीर, टोने-टोटके और गंडे-ताबीज के भी चक्कर उन्होंने चलाये।

इधर आलम यह था कि सोना खुद ही मां बनने को तरस रही थी। ऊपर से मां जी की बातें उसके उदास मन को और भी उदास कर देती थी।

रमेश सब-कुछ देखता और सुनता था। पर मां जी के सामने वह कुछ बोल नहीं पाता था। और फिर आखिर-कार नौकरी के बहाने वह दूसरे शहर में चला गया। कुछ दिनों बाद उसने सोना को भी अपने पास बुला लिया।

अब जब से सोना ने सुना था कि मां जी आ रही हैं, तब से उसका मन कांप रहा था।

दूसरे दिन मां जी भी आ गयीं। सोना ने उनके पांव छुए। वही आशीर्वाद मिला—"दूधो नहाओ पूतो फलो!" परन्तु सोना को लगा मानों वे उसे आशीर्वाद नहीं दे रहीं

हों, बल्कि उससे विनती कर रही हों। वह जल्दी से रसोई घर में घुस गयी।

इस बार मां जी कुछ तय करके ही आयी थीं। वे हर समय यही कहती सुनाई देतीं–"हम तो बच्चे का मुंह देखने को तरस गये हैं ! पता नहीं भगवान कब हमारी इच्छा पूरी करेंगे !"

सोना की पड़ोसिनों से भी वे इसी प्रकार की बातें करतीं। पड़ोसिनें भी अब सोना को अजीब नजरों से घूरतीं। वे उसे बांझ कहतीं और अशुभ समझतीं। किसी भी शुभ काम में वे सोना को बुलाने में झिझकतीं। लोग अपने बच्चों को उससे दूर रखते। वे डरते कि कहीं वह उन पर जादू-टोना न कर दे। सोना का तो जैसे जीना दूभर हो गया !

फिर एक दिन उसने यह भी सुना कि उसकी पड़ोसिन रधिया मां जी से कह रही थी–"बहन, सोना तो बांझ है। तुम अपने बेटे की दूसरी शादी क्यों नहीं कर देतीं ?"

इस पर मां जी ने भी उत्तर दिया था कि "हां, काफी दिनों से मैं भी यही सोच रही हूं।"

इसके आगे सोना न सुन सकी। वह दौड़ कर अपने कमरे में आई। वहां पलंग पर गिर कर फूट-फूट कर रोने लगी।.....

सोना किस-किस को समझाती कि उसका सूना मन भी बच्चे के लिए तड़पता रहता था। लेकिन रमेश की दूसरी शादी की बात सुन कर तो वह सन्नाटे में आ गयी थी !

अब सोना उदास और सहमी सी रहने लगी थी। रमेश क्या सचमुच दूसरी शादी कर लेगा ? सौत को क्या वह बरदाश्त कर लेगी ?—इसी तरह के सवाल हर समय उसके कोमल मन को बींधते रहते।

परन्तु रमेश से उसने कुछ नहीं कहा। वह अकेली ही भीतर ही भीतर घुटने लगी।.....

एक दिन सोना की सहेली शीला उससे मिलने आयी। सोना की उदासी उससे छिपी न रह सकी। उसके बहुत जोर देने पर सोना ने सिसकते हुए सारी बात उसे बता दी।

शीला सोना की बात सुन कर परेशान हो उठी। उसे सोना से पूरी हमदर्दी थी। उसने सोना से कहा, "देख सोना, तेरे साथ यह कुछ नया नहीं हो रहा है। सदियों से औरतों पर इस तरह का अन्याय होता रहा है। लेकिन तुम्हारे ऊपर उनका यों दोष मढ़ देना उचित नहीं है। तुम अपनी जांच करवाओ। विज्ञान बहुत तरक्की कर गया है। अगर तुम में कोई दोष होगा तो उसका इलाज हो सकता है।"

शीला के ये बोल सोना के लिए मरहम से कम न थे।

उसे उनसे बहुत ढाढ़स मिला। उसने अपनी डाक्टरी जांच करवाने का फैसला भी कर लिया।

दूसरे दिन सोना रमेश के साथ डाक्टर के पास गयी। डाक्टर ने सभी तरह की जांच और जरूरी टेस्ट किये।

जब तक डाक्टरी रिपोर्ट न मिली, सोना आशा और निराशा के झूले में झूलती रही। –पता नहीं क्या खराबी निकलेगी ? इलाज हो पाएगा या नहीं ? क्या वह मां बन सकेगी ? क्या बांझपन का कलंक उसके माथे से मिट पाएगा ? यही सब सोचती वह बेचैनी से डाक्टर की रिपोर्ट का इंतजार करने लगी।

आखिर रिपोर्ट आ गयी। डाक्टर ने सोना को बधाई दी, "सोना, तुम मां बनोगी। तुम में कोई कमी नहीं है।"

डाक्टर की बात सुनकर सोना मन ही मन मगन हो गई। उसकी आंखों में खुशी के आंसू तैर आए।

डाक्टर ने रमेश से कहा, "रमेश जी, आपको सोना

से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। अच्छा होगा अगर आप भी अपनी जांच करवा लें..... ।"

"इनकी जांच ! इनमें क्या कमी होगी ? कमी तो औरतों में ही होती है।" सोना ने डाक्टर की बात काट दी।

डाक्टर ने कहा, "सोना ! कमी हमेशा औरतों में ही नहीं होती। कई पुरुष पूरे मर्द होते हुए भी पिता नहीं बन पाते। जांच कराने में कोई हर्ज नहीं है।"

रमेश जांच कराने के लिए तैयार हो गया। लेकिन सोना को तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। वह तो सोच भी नहीं पा रही थी कि रमेश में भी कमी हो सकती थी।

उसने डाक्टर से फिर पूछा, "डाक्टर दीदी, इनमें भला क्या कमी हो सकती है ?"

डाक्टर ने उत्तर देने के बजाय उससे पूछा, "क्या तुम जानती हो कि बच्चा कैसे बनता है ?"

सोना ने 'नहीं' में सिर हिलाया। डाक्टर ने कहा, "आज मुझे बहुत काम है। कल आना तो मैं तुमको सब कुछ समझा दूंगी।"

दूसरे दिन सोना डाक्टर दीदी के पास गई। वे सोना को देखते ही बोलीं, "सोना, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी।"

डाक्टर दीदी ने सोना को बताना शुरू किया, "सोना, औरतों के पेट के भीतर एक बच्चेदानी होती है। कूल्हे की हड्डियां बच्चेदानी को चारों तरफ से घेरे रहती हैं। वे बच्चेदानी की रक्षा करती हैं।

उन्होंने एक चित्र की ओर इशारा किया, "देखो–इस तरह—"

फिर उन्होंने आगे बताया, "बच्चेदानी बहुत छोटी होती है। यह ऊपर से चौड़ी और नीचे की ओर कुछ पतली होती है। इसकी दीवारें मोटी मांसपेशियों की बनी होती हैं। जब गर्भ ठहर जाता है, तो गर्भ बढ़ने के साथ-साथ बच्चेदानी की दीवारें भी आसानी से फैलती जाती हैं।"

डाक्टर दीदी ने सोना को फिर एक चित्र दिखाया– "बच्चेदानी का निचला सिरा खुला होता है। इसे बच्चेदानी की गरदन कहते हैं। यह गरदन योनि के भीतर कुछ ऊपर की ओर होती है। योनिद्वार दोनों जांघों के बीच खुलता है। यहीं से हर महीने माहवारी का खून आता है।

बच्चेदानी के ऊपरी हिस्से के दोनों तरफ अण्डेवाली

नालियां होती हैं। यह पतली और करीब चार इंच लम्बी होती हैं। इनका मुंह पंखे के आकार का और खुला हुआ होता है।"

सोना आश्चर्य से यह सब सुन रही थी। डाक्टर दीदी ने आगे बताना शुरू किया—"इन्हीं नालियों के मुंह में लाखों कच्चे अण्डे होते हैं। हर महीने उनमें से केवल एक अण्डा पक कर बाहर निकलता है। पका हुआ अण्डा सीधा अण्डे-वाली नली के मुंह में चला जाता है।"

उन्होंने मुस्करा कर सोना की ओर देखा, "क्यों सोना, समझ गई ?" सोना ने उत्तर दिया, "हां दीदी, मुझे तो मालूम ही नहीं था कि मनुष्य के भी अण्डे होते हैं।"

डाक्टर दीदी ने कहा—"अरे, इसी अण्डे से तो बच्चा बनता है।"

सोना ने जानने की इच्छा से पूछा, "वह कैसे ?"

डाक्टर दीदी ने बताया, "स्त्री के पुरुष से मिलन के समय लाखों पुरुष बीज बच्चेदानी में घुसते हैं। वहां से वे दोनों तरफ की अण्डे वाली नालियों में जाते हैं। वहां केवल एक पका हुआ अण्डा होता है। उन लाखों बीजों में से केवल एक पुरुष-बीज उस अण्डे से मिलता है। बाकी पुरुष-बीज नष्ट हो जाते हैं। जब पुरुष-बीज अण्डे में घुस जाता है तो अण्डा फलित हो जाता है। इस फलित अण्डे से बच्चा बनना शुरू हो जाता है।

इस बीच बच्चेदानी की परत फलित अण्डे के इन्तजार

में मोटी हो जाती है। अगर फलित अण्डा आकर उससे चिपक जाता है तो माहवारी का आना बन्द हो जाता है। यह नीचे चित्र को नम्बर से सिलसिलेवार देखो। इसमें दिखाया गया है कि फलित अण्डे से धीरे-धीरे बच्चा कैसे बनता है ?

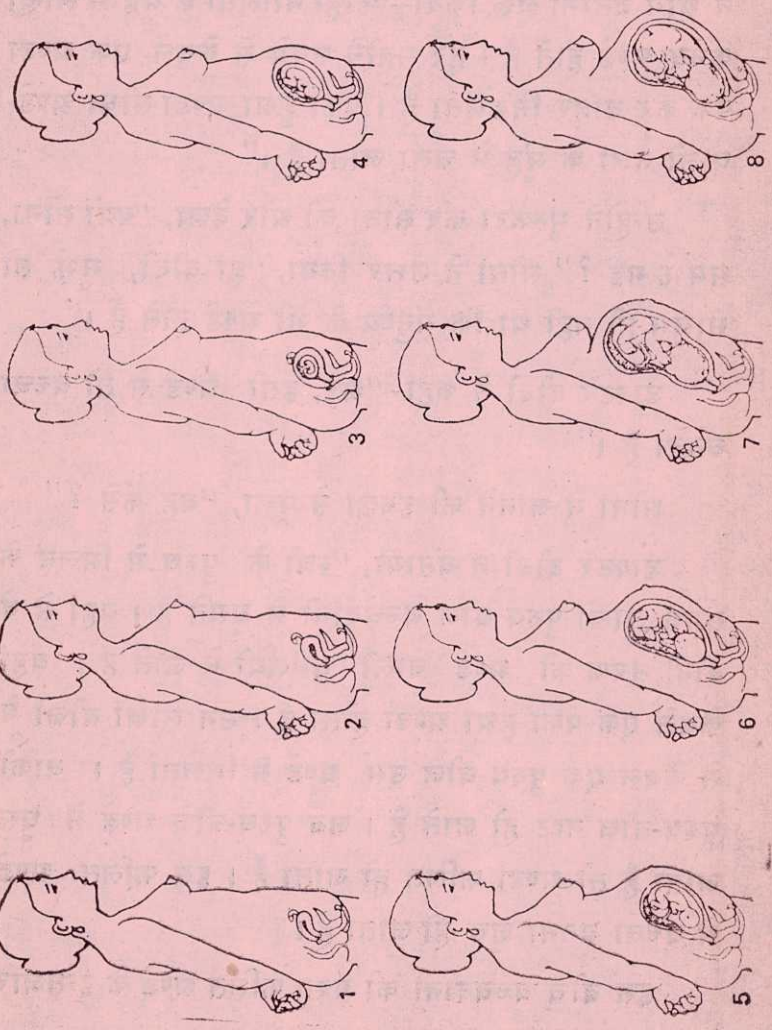

सोना ने बीच में टोका, "डाक्टर दीदी, क्या हमेशा एक ही अण्डा पकता है ?"

डाक्टर दीदी ने उत्तर दिया, "आमतौर से केवल एक ही अण्डा पक कर बाहर आता है। परन्तु कभी-कभी दो अण्डे बाहर आ जाते हैं। यदि दोनों अण्डे एक साथ हो जाएं तो जुड़वां बच्चे पैदा होते हैं।"

सोना ने आश्चर्य और उत्सुकता से पूछा, "अगर अण्डा फलित न हो तो ?"

"तो अण्डा और बच्चे के बढ़ने के लिए तैयार खून और दूसरी चीजें माहवारी के रूप में बाहर निकल जाती हैं।"

सोना को यह सब जानना अच्छा लगा। उसने पूछा, "दीदी यह तो आपने औरतों के विषय में बताया। पुरुष-बीज कैसे बनते हैं, जरा यह भी बताइए ?"

डाक्टर दीदी बोलीं–"यह तुमने ठीक पूछा सोना।" फिर बताना शुरू किया–"पुरुष के भी प्रजनन अंग होता है। इसमें बीज कोष की थैली बीज-कोष को घेरे रहती है। बीज-कोष में पुरुष बीज बनते हैं। बीज कोष से जो नली निकलती है उसमें ये बीज जमा होते हैं। प्रजनन सम्बन्धी अंग एक रस पैदा करते हैं। इस रस और पुरुष बीज के मिलने से वीर्य बनता है।"

डाक्टर दीदी ने थोड़ा रुककर कहा, "सोना, अब तो

तुम जान गई हो कि बच्चा तब ही बनता है जब महिला का अण्डा पुरुष बीज से फलित होता है। अब तुम बताओ कि यदि किसी के बच्चे नहीं होते तो यह किसका दोष है ?"

सोना ने तुरंत उत्तर दिया, "दीदी, अब मैं समझ गई हूं। दोष औरत, मर्द या दोनों में ही हो सकता है।

डाक्टर दीदी ने कहा, "बिल्कुल ठीक। इसलिए यदि चाहने पर भी बच्चा न हो तो पति पत्नी दोनों को ही अपनी जांच करानी चाहिए।"

सोना ने कुछ झिझकते हुए पूछा, "दीदी, एक बात पूछूं ?"

डाक्टर बोलीं–"हां, हां, जरूर पूछो। मन में कोई शंका नहीं रहनी चाहिए।"

"दीदी, मेरी एक सहेली है आशा। किस्मत का खेल है कि मैं बच्चे के न होने से परेशान हूं और वह ज्यादा बच्चे होने से। उसके पांच बच्चे हैं। वह उनकी ठीक देख-भाल भी नहीं कर पाती है। बार-बार गर्भ धारण से उसका स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे गिरने लगा है। क्या कोई ऐसा उपाय है कि अब उसके बच्चे न हों ?"–सोना ने पूछा।

डाक्टर ने उत्तर दिया, "सोना ! अभी तक लोग बच्चे को भगवान की देन समझते थे। परन्तु अब लोग अपनी

इच्छानुसार बच्चों की संख्या और जन्म में अंतर रख सकते हैं। ऐसा करने के दो मुख्य तरीके हैं–

1. स्थाई तरीके

2. अस्थाई तरीके।

सोना ने टोंका, "दीदी जरा समझा कर बताइए।"

डाक्टर ने उत्तर दिया, "स्थाई तरीके से गर्भ को स्थाई रूप से रोका जा सकता है। इसका केवल एक ही तरीका है नसबंदी। नसबंदी स्त्री पुरुष किसी की भी हो सकती है। इस विधि में स्त्री में अण्डेवाली तथा पुरुष में बीजकोण की नली को काट कर गांठ लगा दी जाती है। इससे पुरुष बीज तथा स्त्री के अण्डे अपना काम नहीं कर पाते तथा गर्भ की स्थापना रुक जाती है।"

"और अस्थाई तरीके……!"–सोना ने पूछा।

"अस्थाई तरीके द्वारा दम्पति जब तक चाहें, गर्भ धारण करने को रोक सकते हैं। ये तरीके वे लोग अपनाते हैं जो देर से बच्चे चाहते हैं या दो बच्चों के बीच अन्तर रखना चाहते हैं। इन विधियों का प्रयोग मिलन (संभोग) के समय, मिलने से पहले या मिलने के बाद भी किया जा सकता है। इनमें ये मुख्य हैं–निरोध, डायफ्राम, जैली क्रीम, झागदार गोलियां, खाने वाली गोलियां, कापर टी, आत्म संयम तथा सुरक्षित काल आदि।

इसके अतिरिक्त यदि दम्पत्ति चाहे तो अनचाहे गर्भ

को समाप्त करने के लिए गर्भपात भी करा सकते हैं। डाक्टर से कराये गये गर्भपात को अब कानूनन जायज करार किया जा चुका है।"

सोना ने कहा, "दीदी आपने तो इतने तरीके बता दिए। मैं अपनी सहेली को क्या बताऊं.....?"

डाक्टर दीदी हंस पड़ीं, "तुम अपनी सहेली को मेरे पास या किसी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में भेज दो। ऐसे लोगों को वहां डाक्टरी सलाह मुफ्त दी जाती है।

रमेश ने जब डाक्टर की रिपोर्ट मां जी को सुनायी तो वह चिढ़ गयीं। वे बोलीं, "यह सब इस चुड़ैल की चाल है। मैं सब समझती हूं। अब तुझमें दोष निकालना चाहती है।"

रमेश ने मां को समझाना चाहा, "मां, ऐसे कैसे हो सकता है? डाक्टर ने वही लिखा है जो सच है। सोना को कुछ मत कहो। वह पहले से ही बहुत दुखी है।"

मां जी ने दिल का गुबार निकाला, "जोरू का गुलाम! उसके लिए खुद बांझ तक बनने को तैयार है!"

मां जी ने बहुत रोका। पर रमेश ने अपनी जांच करवा ही ली।

सोना रोज प्रार्थना करती, "हे भगवान, मेरे पति में कोई दोष न हो।"

मां जी उसे हर समय जली-कटी सुनाती रहतीं।

आखिर में रिपोर्ट मिलने का समय आ गया। डाक्टर ने बताया कि कमी रमेश में है। वह पिता बनने के योग्य नहीं है।

रिपोर्ट सुन कर सोना दुखी हो गयी। उसका हृदय पीड़ा से भर उठा। उसने डाक्टर से इलाज के बारे में पूछा।

डाक्टर ने कई इंजेक्शन और दवाएं बतायीं। उसने कहा, "घबराने की बात नहीं है। हर तरह के बांझपन को दूर किया जा सकता है। हो सकता है कि इलाज में समय लगे। लेकिन दस में से नौ लोगों का बांझपन इलाज से दूर हो सकता है।"

रमेश ने इलाज कराना शुरू कर दिया। सोना हर समय खुद को खुशहाल दिखाने की कोशिश करती। वह कोशिश करती कि रमेश इस बारे में सोचना छोड़ दे। लेकिन उसका मन मां बनने को तड़पता रहता।

मां जी क्या कहतीं! कहने को बाकी बचा क्या था। वे सब-कुछ जान चुकी थीं। वे हर समय यही सोचती रहती थीं कि अब उपाय क्या है?

आखिर उपाय उनकी समझ में आ गया। उन्होंने ओझा-पंडितों के चक्कर में दौड़ना शुरू कर दिया। वे सुबह निकलतीं तो शाम को घर वापस आतीं।

पर रमेश को इस सब से सख्त चिढ़ थी। उसने उनके गंडे और ताबीज पहनने से साफ इनकार कर दिया। उसने मां से साफ-साफ कह दिया–"देखो मां, मैं इलाज करा रहा हूं। मैं वैसे ही दुखी हूं। अब उलटी-सीधी बातें करके मेरा दिमाग मत खराब करो।"

मां जी ने कहा, "सो तो ठीक है बेटा ! पर इंसान अपनी कोशिश तो करता ही है। कल रधिया कह रही थी कि क्या पता किसी ने कुछ करा-धरा दिया हो !"

"फिर वही तमाशा। मैं पूछता हूं, यह वही रधिया है न जिसने कहा था कि सोना बांझ है ? वह क्या बताएगी ? मुझे कोई क्यों करा देगा कुछ ? मैं क्या किसी का दुश्मन हूं ?"

रमेश इसी प्रकार बहस करता। वह मां की कोई बात मानने को तैयार न होता। वह झाड़-फूंक पर पैसा और समय नहीं गंवाना चाहता था।

आखिर मां जी हार कर चुप हो गयीं। वे उसे उसके हाल पर छोड़ कर वापस चली गयीं।

रमेश से सोना का अकेलापन सहन नहीं होता था। एक दिन उसने सोना से कहा, "क्यों न हम कोई अनाथ बच्चा गोद ले लें ? इससे उस बच्चे का भी भला होगा और हमारे मन को भी शांति मिलेगी !"

सोना चुपचाप कुछ सोचती रही। उसे आस थी कि

एक दिन उसकी बगिया में भी फूल खिलेगा। इसलिए वह न तो हां कर सकी और न ही नहीं।

दो साल यूं ही बीत गये। रमेश का इलाज बराबर हो रहा था। सोना अपने दर्द को छिपाती रही। रमेश के सामने वह बनावटी मुसकान चेहरे पर बिखेर लेती। पर रमेश उसके दर्द को समझता था। पड़ोस के बच्चों को हसरत-भरी निगाहों से ताकती सोना को देख कर उसके हृदय में भी एक दर्द की कसक उठती।

सोना सूनेपन से उकता चुकी थी। उसने अपने दर्द को दूर करने के लिए पास के स्कूल में नौकरी कर ली।

अब वह हर समय बच्चों में घिरी रहती। बच्चों को देखकर उसका मन तड़प उठता। कभी वह ईर्ष्या से जलती। कभी उनके कोमल गालों को प्यार से चूम लेती।

धीरे-धीरे वह अपने सारे गम भूल गयी। वह उन बच्चों में ही खो गयी। अब वह हर समय व्यस्त और प्रसन्न रहती। बच्चे उसे घेरे रहते। वह अपनी मां से ज्यादा उसे प्यार करने लगे।

कभी-कभी वह सोचती कि नाहक इतने साल गंवाए। पहले ही स्कूल में नौकरी कर लेती तो इतने दिन सूनेपन में न बीतते।

आज छुट्टी का दिन था। सुबह से ही हलकी-हलकी फुहार पड़ रही थी। रमेश डाक्टर के पास चला गया था।

सोना घर की सफाई में लगी थी। स्कूल में व्यस्त रहने के कारण वह छुट्टी के दिन ही ठीक से सफाई कर पाती थी।

सफाई करते करते उसकी नजर शादी वाली तसवीर पर पड़ी। उस पर खूब धूल जमा हो गयी थी। सोना ने अपने आंचल से धूल साफ की। उसे याद आया—पहले वह हर समय इसी तसवीर को ताकती और कुढ़ती रहती थी। अपनी भूल पर वह मुसकरा पड़ी। लेकिन मन ही मन उसे पछतावा भी हुआ कि एक पढ़ी-लिखी औरत होने के बावजूद उसने इतना वक्त गलत ख्यालों में गंवाया !..... उसने तसवीर वापस जगह पर रख दी।

इतने में रमेश आ गया। उसने आते ही सोना को अपनी बांहों में भर लिया। वह बहुत खुश नजर आ रहा था। सोना ने पूछा, "क्या बात है ? बहुत खुश लग रहे हैं ?"

रमेश ने हंसते हुए कहा, "पगली, आज डाक्टर ने बताया है कि मैं पिता बनने योग्य हो गया हूं।"

सोना को लगा जैसे उसके मनमंदिर में घंटियां बज उठी हों ! उसकी आंखों से खुशी के आंसू लुढ़क कर उसके गालों पर मोतियों जैसे झिलमिलाने लगे !

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002